LIVE

NET JRF Solutionist

Daily Live 12:00 PM

FILLERFORM LIVE

NTA UGC NET 2022

हिंदी साहित्य(PAPER -2)

इकाई-5

(हिंदी कविता) भाग-2

खुसरो की पहेलियां और मुकरियां

BY JYOTI MA'AM

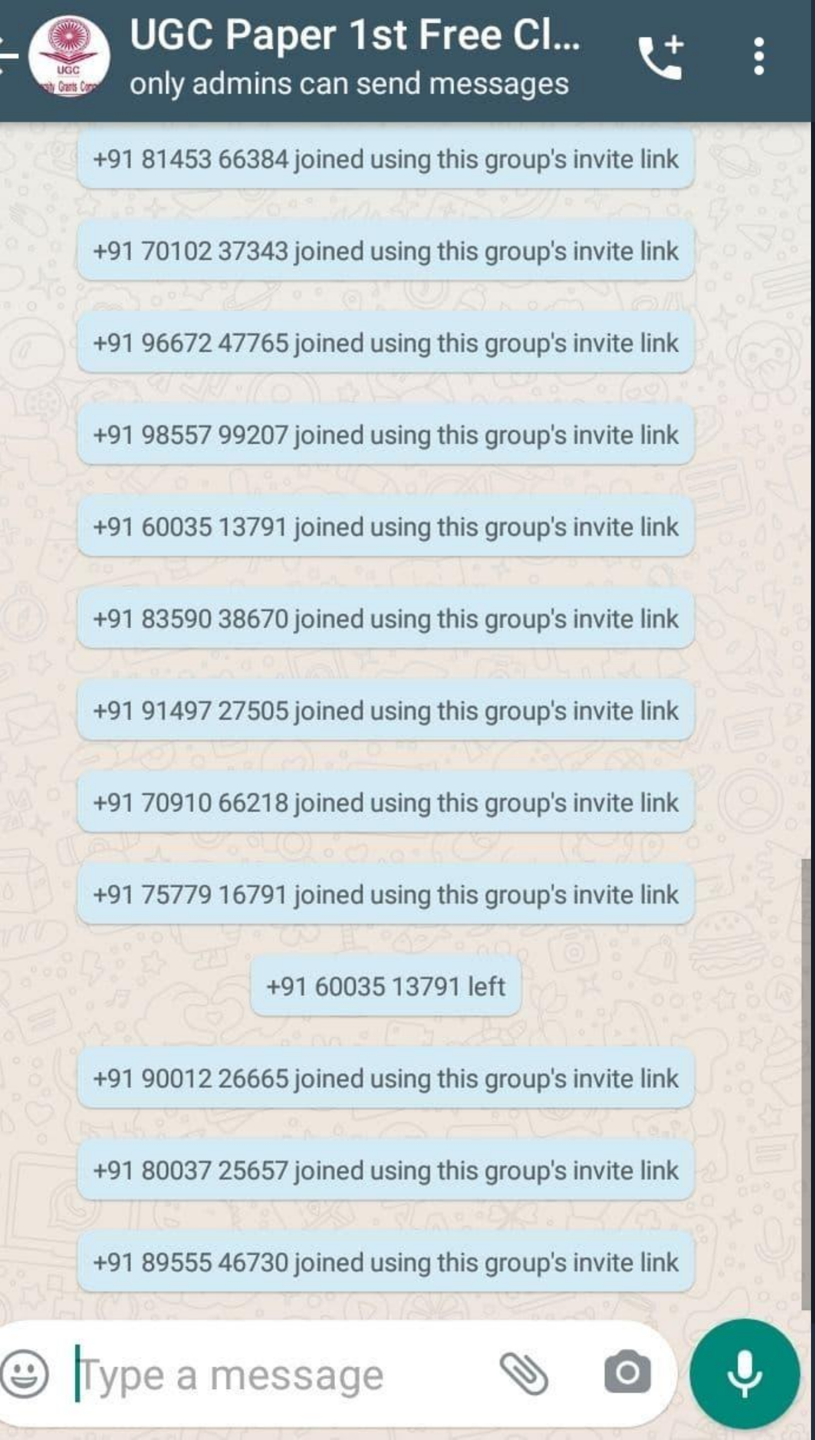
UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
+91 81453 66384 joined using this group's invite link
+91 70102 37343 joined using this group's invite link
+91 96672 47765 joined using this group's invite link
+91 98557 99207 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 joined using this group's invite link
+91 83590 38670 joined using this group's invite link
+91 91497 27505 joined using this group's invite link
+91 70910 66218 joined using this group's invite link
+91 75779 16791 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 left
+91 90012 26665 joined using this group's invite link
+91 80037 25657 joined using this group's invite link
+91 89555 46730 joined using this group's invite link
Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
December 28
Channel created
Channel photo changed
UGC
Broadcast
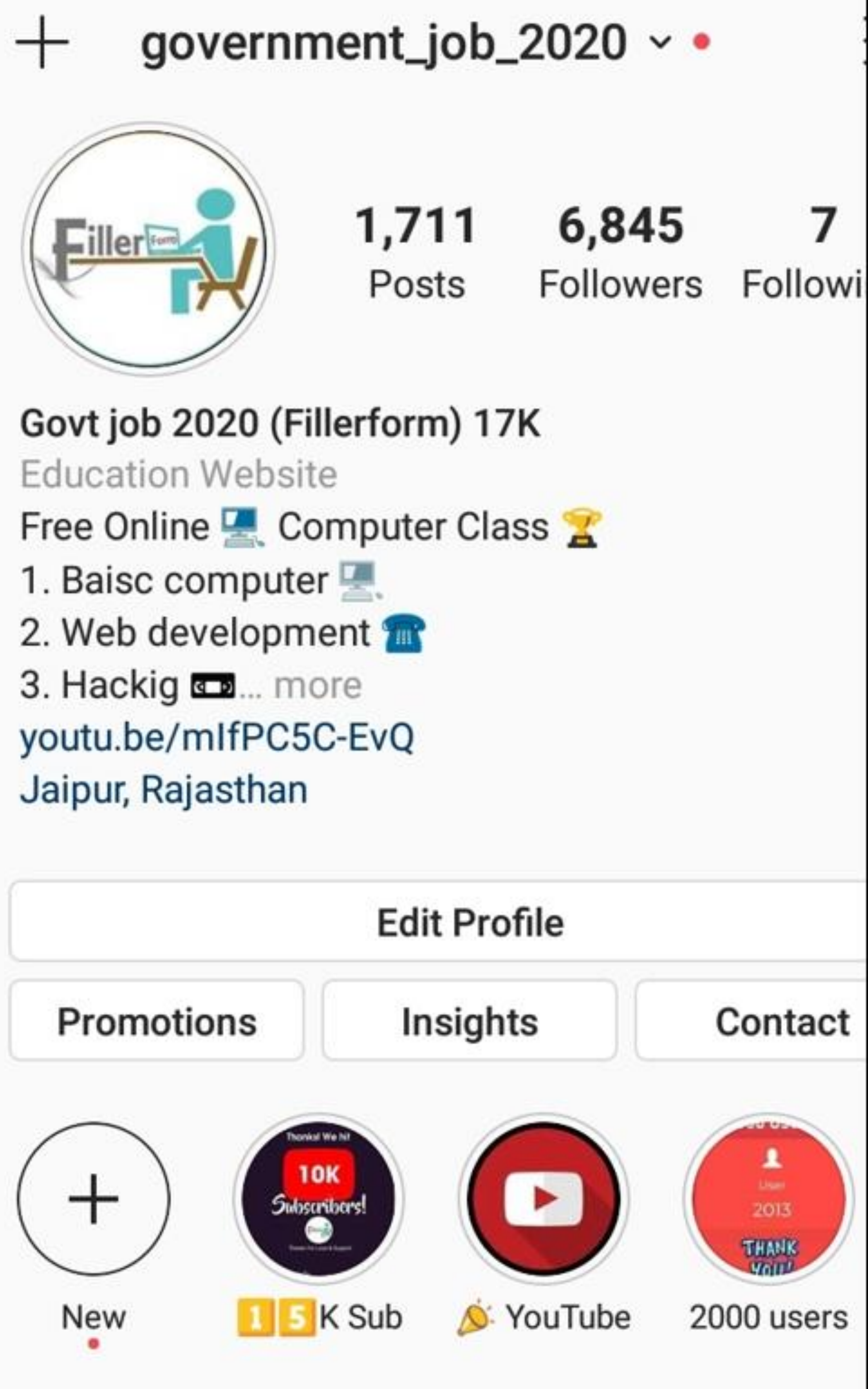
government_job_2020
1,711
Posts
6,845
Followers
7
Followi
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig ... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
New
15K Sub
YouTube
2000 users

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

5000+MCQ+PYQ

Free Books

100% OFF

fillerform

इकाई – V

हिन्दी कविता

पृथ्वीराज रासो – रेवा तट

अमीरखुसरो – खुसरों की पहेलियाँ और मुकरियाँ

विद्यापति की पदावली (संपादक – डॉ. नरेन्द्र झा) – पद संख्या 1 - 25

कबीर – (सं.- हजारी प्रसाद द्विवेदी) – पद संख्या – 160 - 209

जायसी ग्रंथावली – (सं. राम चन्द्र शुक्ल) – नागमती वियोग खण्ड

सूरदास – भ्रमरगीत सार – (सं.- राम चन्द्र शुक्ल) – पद संख्या 21 से 70

तुलसीदास – रामचरितमानस, उत्तर काण्ड

बिहारी सतसई – (सं.- जगन्नाथ दास रत्नाकर) – दोहा संख्या 1 – 50

घनानन्द कवित्त – (सं.- विश्वनाथ मिश्र) – कवित्त संख्या 1 – 30

मीरा – (सं.- विश्वनाथ त्रिपाठी) – प्रारम्भ से 20 पद

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध – प्रियप्रवास

मैथिलीशरण गुप्त – भारत भारती, साकेत (नवम् सर्ग)

जयशंकर प्रसाद – आंसू, कामायनी (श्रद्धा, लज्जा, इड़ा)

निराला - जुही की कली, जागो फिर एक बार, सरोजस्मृति, राम की शक्तिपूजा, कुकरमुत्ता, बाँधो न नाव इस ठाँव बंधु।

सुमित्रानंदन पंत – परिवर्तन, प्रथम रश्मि

महादेवी वर्मा – बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ, मै नीर भरी दुख की बदली, फिर विकल है प्राण मेरे, यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो, द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र

रामधारी सिंह दिनकर – उर्वशी (तृतीय अंक), रश्मिरथी

नागार्जुन – कालिदास, बादल को घिरते देखा है, अकाल और उसके बाद, खुरदरे पैर, शासन की बंदूक, मनुष्य हूँ।

सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय – कलगी बाजरे की, यह दीप अकेला, हरी घास पर क्षण भर, असाध्यवीणा, कितनी नावों में कितनी बार

भवानीप्रसाद मिश्र – गीत फरोश, सतपुड़ा के जगल

मुक्तिबोध – भूल गलती, ब्रह्मराक्षस, अंधेरे में

धूमिल – नक्सलवाड़ी, मोचीराम, अकाल दर्शन, रोटी और संसद

8209837844

www.ugc-net.com

हिंदी कविता

अमीर खुसरो की पहेलियां और मुकरियां

अमीर खुसरो

खुसरो की पहेलियां और मुकरियां

1. मध्य एशिया के ‘लाचन जाति’ के तुर्क सैफुद्दीन के पुत्र अमीर खुसरो का **जन्म** सन् 1255 ई० (1312 विं संवत्) में गाँव पटियाला, जिला ऐटा में हुआ था।
2. इनका मूलनाम अब्दुल हसन था।
3. **मृत्युकाल**: 1324 ई० (1381 विं सं)उपाधि: ‘खुसरो सुखन’ यह उपाधि मात्र 12 वर्ष के उम्र में ही बुजुर्ग विद्‍वान ख्वाजा इजुद्‍दीन द्‍वारा प्रदान किया गया था।
4. उपनाम: तुर्क-ए-अल्लाह, तोता-ए-हिन्द
   गुरु का नाम: **निजामुद्‍दीन औलिया।**

8209837844 www.ugc-net.com

5. यह इतिहासकार गणितज्ञ, भूगोलवेत्ता , संगीतकार और साहित्यकार थे|

6. आदिकाल के अंतिम चरण के कवि थे| इन्हें खड़ी बोली का प्रथम कवि माना जाता है |

7. अमीर खुसरो अलाउद्दीन के दरबार कवि और निजामुद्दीन औलिया के परम शिष्य हैं|

8. उन्होंने जनता के मनोरंजन के लिए पहेलियां लिखी व स्वभाव के विनोदी, मिलनसार और सहृदय थे |

9. साहित्य संगीत के क्षेत्र में इन्होंने तबला एवं सितार से भारतीय परंपराओं का परिचय करवाया|

10. खुसरो की रचनाएँ: इनके द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या 100 बताई जाती है, जिसमे से कुछ ही उपलब्ध है|

कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ– **खालिकबारी, पहेलियाँ, मुकरियाँ, गजल, दो सूखने, नुहसिपहर, नजरान-ए-हिन्द, हालात-ए-कन्हैया**

पहेली की परिभाषा: किसी वस्तु या विषय का ऐसा गूढ़ वर्णन जिसके आधार पर उत्तर देने या उस वस्तु का नाम बताने में बहुत सोच-विचार करना पड़े उसे पहेली या बुझौअल भी कहा जाता है।

बूझ पहेली (अंतर्लापिक)

1.बाला था जब सबको भाया, बड़ा हुआ कुछ काम न आया।
खुसरो कह दिया उसका नाव, अर्थ करो नहीं छोड़ो गाँव।।
उत्तर– दीया (दीपक)

2. इधर को आवे उधर को जावे। हर हर फेर काट वह खावे।।
ठहर रहे जिस दम वह नारी। खुसरो कहें वारे को आरी।।
उत्तर- आरी

3. एक नार वह दांत दंतीली। पतली दुबली छैल छबीली।।
जब वा तिरियहिं लागै भूख। सूखे हरे चबावे रुख।।
जो बताय वाही बलिहारी। खुसरो कहें वारे को आरी।।
उत्तर- आरी

4. श्याम बरन और दांत अनेक। लचकत जैसी नारी।।
दोनों हाथ से खुसरो खींचे। और कहें तू आरी।।
उत्तर- आरी

5. एक नार जब बात कर आवे। मालिक अपने ऊपर बुलावे।।
है वह नारी सब के गौ की। खुसरो नाम लिए तो चौंकी।।
उत्तर- चौकी

6. टूटी टाट के धूप में पड़ी। जों जों सुखी हुई बड़ी।।
उत्तर- बड़ी

7. फ़ारसी बोली आई ना। तुर्की ढूँढी पाई ना।।
हिन्दी बोली आरसी आए। खुसरो कहें कोई न बताए।।
उत्तर- आरसी (दर्पण, आइना)

8. पौन चलत वह दें बढ़ावे। जल पीवत वह जीव गँवावे।।
है वह प्यारी सुंदर नार। नार नहीं पर है वह नार।।
उत्तर- नार (आग)

9. एक नार करतार बनाई। न वह क्वारी न वह ब्याही।।
सूहा रंगहि वाको रहै। भाबी-भाबी हर कोई कहै।।
उत्तर- बिरबहुटी

10. एक पेड़ रेती में होवे। बिन पानी ही हरा रहे।।
पानी दिये से वह जल जाय। आँख लगे अँधा हो जाए।।
उत्तर-आक

11. सावन भादों बहुत चलत है, माघ पूस में थोड़ी।
अमीर खुसरो यूँ कहें, तू बूझ पहेली मोरी।
उत्तर- मोरी (नाली)

12. चार महीने बहुत चले हैं और महीने थोड़ी।
अमीर खुसरो यों कहें तू बूझ पहेली मोरी।।
उत्तर- मोरी (नाली)

13. अन्दर है और बाहर बहे।
जो देखे सो मोरी कहें।। उत्तर- मोरी (नाली)

14. गोल मटोल और छोटा-मोटा, हर दम वह तो जमीं पर लोटा।
खुसरो कहें नहीं है झूठा, जो न बूझे अकिल का खोटा। उत्तर- लोटा

बिन-बूझ पहेली (बहिर्लापिका) – इस पहेली का उत्तर पहेली के बाहर होता है।

बिधना ने एक पुरुख बनाया। तिरिया दी औ नीर लगाया।।
चुक भई कुछ वासे ऐसी। देश छोड़ भयो परदेश।।1।।
उत्तर- आदमी

झिलमिल का कुंआ, रतन की क्यारी।
बताओं तो बताओं, नहीं तो दूँगी गारी।।2 ।।
उत्तर- दर्पण

एक नार पानी पर तेरे। उसका पुरुख लटका मरे।।
ज्यों-ज्यो खंदी गोटा खाय। त्यों-त्यों भडुआ मारा जाए।।3।।
उत्तर- घड़ी और घंटा

पानी में निसदिन रहे, जाके हाड़ मास।
काम करे तलवार, का फिर पानी में बास।।4।।
उत्तर- कुम्हार का डोरा

एक जानवर जल में रहे, औ नाम में वाके खींच।
उछल वार खड़ा करे, जल का जल के बीच।।5।।
उत्तर- कुम्हार का डोरा

गोल हाल औ सुंदर मूरत, कला मुँह तिस पर खुबसूरत।
उसको जो हो महरम बूझे, सीना देख पिरोना सूझे।।6।।
उत्तर-छाती

एक रुख में अचरज देखा, दाल घनी देखलावे।एक है पत्ता वाके ऊपर, माथ छुवे कुम्हलावे।
सुंदर वाकी छाँव है, औ सुंदर वाको रूप।खुला रहे औ नहिं कुम्हलावे, जों-जों लागे धूप।।7।।

उत्तर- छाता

बालों बाँधी एक छिनाल, नित वो रहती खोले बाल।
पी को छोड़ नफ़र से राजी, चतुरा हो सो जीते बाजी।।8।।

उत्तर- चुनरी

डाला था सब को मन भाया, टांग उठाकर खेल बनाया।
कमर पकड़ का दिया ढकेल, जब होवे वह पूरा खेल।।9।।

उत्तर- झूला

<u>**मुकरियाँ**</u> **:मुकरी भी एक प्रकार का पहेली' (अप्नहुति) है। परन्तु मुकरी को बूझने के लिए उसमे उसका उत्तर प्रश्नोत्तर के रूप में दिया रहता है।**

जैसे- "लिपट लिपट के वा के संग सोई, छाती से छाती लगा के रोई।

दांत से दांत बजे तो ताड़ा ऐ सखि साजन? ना सखि जाड़ा!

इस प्रकार 'ऐ सखी साजन ना सखी जाड़ा।'

इस प्रकार उत्तर देने के कारण इसका नाम कह-मुकरी पड़ गया।

8209837844 www.ugc-net.com

अंगों मेरे लपटा आवे, वाका खेल मोरे मन भावे।
कर गहि, कुछ गहि, गहे मोरि माला।ऐ सखी साजन ना सखी बाला।।1।।

आपने आये देत ज़माना है सोते को यहाँ जगाना।।
रंग और रस का फाग मचाया, आप भिजे औ मोहि भिजाया।।
वाको कौन न चाहे नेह, ऐ सखी साजन ना सखी मेह ।।2।।

नीला कंठ और पहिरे हरा, सीस मुकुट नीचे वह खड़ा।
देखत घटा अलापे जोर, ऐ सखी साजन ऐ सखी मोर।।3।।

8209837844 www.ugc-net.com

देखत में है बड उजियारी, है सागर से आती प्यारी।
सिगरी रैना संग ले आती, ऐ सखी साजन ना सखी मोती।।4।।

उठा दोनों टांगन बीच डाला, नाप-टोल में है वह मंहगा।
मोल-टोल में है वह मंहगा, ऐ सखी साजन ना सखी लहँगा
।।5।।

धमक चढ़े सुध-बुध बिसरावै, दावत जांघ बहुत सुख पावै।
अति बलवंत दिनन को थोड़ा, ऐ सखी साजन ना सखी घोडा
।।6।।

8209837844 www.ugc-net.com

आठ अंगुल का है वह असली, उसके हड्डी न उसके पसली।
लटाधारी गुरु का चेला, ए सखि साजन न सखि केला ।।7।।

देखन में वह गाँठ-गठीला, चाखन में वह अधिक रसीला।
मुख चूमू तो रस का भाँड, ऐ सखी साजन ऐ सखी गांडा।।8।।

टट्टी तोड़ के घर में आया, अरतन-बर्तन सब सरकाया।
खा गया पी गया दे गया बुत्ता, ऐ सखी साजन ऐ सखी कुत्ता।।9।।

दूर-दूर करू तो भगा जाए, छ्न बाहर छ्न आँगन आये।
देहलि छोड़ कहीं नहीं सुतता, ऐ सखी साजन ना सखी कुत्ता ।।10।।

धन्यवाद....

For More Information

8209837844

www.ugc-net.com

/Fillerform /Fillerform /Fillerform

info@fillerform.com